छायावाद का उन्मेष 'झरना' : एक विश्लेषण

अरविन्दर कौर
प्रवक्ता
हिन्दी विभाग
ए0 एस0 कॉलेज

सारांश

निःसंदेह 'झरना' हिन्दी साहित्य समाज में छायावाद की प्रथम कृति के रूप में स्वीकार की गई है । छायावादी काव्य की लगभग सभी प्रवृत्तियों का समावेश हमें 'झरना' में उपलब्ध होता है । यद्यपि 'झरना' को हम जयशंकर प्रसाद जी की छायावादी दृष्टि से, प्रौढ़ एवं परिपक्कव रचना नहीं मान सकते, यह निर्विवाद है कि प्रसाद जी ने इस रचना के द्वारा छायावादी काव्य में प्रवेश किया और साथ ही वे इस रचना के द्वारा साहित्य समाज में छायावादी काव्य के प्रवर्त्तक के रूप में प्रतिष्ठित हुए ।

मुख्य शब्द : छायावादी, प्रेम पथिक, निर्विवाद, अभिहित, संस्करण

प्रस्तावना

प्रसाद जी द्वारा रचित 'प्रेम पथिक' के बाद 'झरना' मुख्य कृति के रूप में उभर कर सामने आई । 'झरना' में अनेक प्रकार के गीतों का संग्रह प्राप्त होने के कारण, इसको गीत संग्रह के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है । इसमें प्रसाद जी की सात–आठ वर्ष की रचनाएं संकलित की गई हैं । 'झरना' के प्रथम संस्करण में २५, द्वितीय संस्करण में ३५ तथा तृतीय संस्करण में ५५ कविताएं संकलित हैं । प्रसाद जी ने ही सर्वप्रथम द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मक और स्थूलता का परित्याग कर प्रतीकात्मक शैली तथा सूक्ष्मभावाभिव्यक्ति का प्रयास अपने इस काव्य में किया है। आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के अनुसार–'' 'झरना' छायावाद की प्रयोगशाला का प्रथम आविष्कार है।[1] इस संग्रह में छायावाद की प्रमुख विशेषता वेदना के आधार पर स्वानुभूतियों की अभिव्यंजना के साथ–साथ भावों में तीव्रता, गंभीरता, प्रवाह एवं एकान्विति भी प्राप्त होती है ।

प्रसाद जी के 'झरना' काव्य संग्रह में, द्विवेदी युग के समस्त अतिवादों का त्याग करके जिस मध्यमार्गीय, मानवीय अथवा समन्यवादी मार्ग को ग्रहण किया, उसकी झलक इसमें पूर्ण रूप से प्राप्त होती है । अतः इसी मार्ग का अनुसरण करते हुए उन्होंने मन और आत्मा की जिन ऊँचाईयों को छूने का प्रयास किया है, वह उनके काव्य संग्रह 'झरना' में स्पष्ट रूप में परिलक्षित होती हैं :–

''मेरे अन्तर में छिपकर भी प्रकटे मुख सुषमा का ।
प्रबल प्रभंजन मलय–मरुत हो, फहरे प्रेम–पताका ।।''[2]

'झरना' में प्रसाद जी ने छायावादी काव्य की समस्त प्रवृत्तियों की झलक दिखाने का अनूठा प्रयास किया । छायावाद की लगभग सभी प्रवृत्तियाँ, चाहें वह व्यक्तिवाद हो, चाहे स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह हो, चाहे प्रकृति चित्रण हो, चाहे नवीन जीवन दर्शन हों, चाहे नारी की सौन्दर्यानुभूति हो, आदि सभी को 'झरना' के माध्यम से यथावत् प्रस्तुत किया है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी 'झरना' छायावादी काव्य के उत्थान में अपना विशेष स्थान रखता है । 'झरना' काव्य में छायावादी काव्य की व्यक्तिवादी प्रवृत्ति की झलक पूर्ण रूप में प्राप्त होती है। 'खोलो द्वार' 'झरना' की एक महत्वपूर्ण रचना है । इसमें व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति का समावेश स्पष्ट रूप में झलकता है । यहाँ ये पंक्तियाँ व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति को दृष्टांकित करती हैं ।

''मेरे धूलि लगे पैरों से, इतना करो न घृणा प्रकाश ।
मेरे ऐसे धूल कणों से कब, तेरे पद को अवकाश ।।
पैरों ही से लिपटा–लिपटा कर, लूँगा निज पद निर्धार ।
अब तो छोड़ नहीं सकता हूँ, पाकर प्राप्य तुम्हारा द्वार ।।''[3]

'झरना' की कविताओं में वैयक्तिक प्रेम के साथ सुख का अनुभव तो होता है, किन्तु पूर्ण अनुभूति की झलक प्राप्त नहीं हो पाती । उदाहरणतः ये पंक्तियां दृष्टव्य हैं :–

''जीवन नाव अंधेरे अन्धड़ में चली ।
अद्भुत परिवर्तन यह कैसा हो गया ।
निर्मल जल पर सुधा भरी है चन्द्रिका,
बिछल पड़ी मेरी छोटी सी नाव भी ।''[4]

'झरना' के काव्य संग्रह में जहाँ एक ओर व्यक्तिवाद की भावना का आभास होता है, वहीं उसमें रहस्यात्मकता की प्रवृत्ति भी साकार रूप में दिखाई देती है । यह काव्य रहस्यात्मकता की दृष्टि से भी परिपूर्ण रचना है । 'झरना' में भी छायावादी काव्य के अनुरूप ही रहस्यात्मक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं । प्रसाद जी ने कहीं–कहीं विभिन्न प्रकार की जिज्ञासाएं प्रस्तुत करके आत्मा को उस प्रभु की ओर उन्मुख करने का प्रयास अभिव्यक्त किया है, जो उनके द्वारा रचित 'बिन्दु' रचना में स्पष्ट झलकता है –

''आज इस धन की अंधियारी में,
कौन तमाल झूमता है, इस सजी सुमन क्यारी में ?
हँस कर बिजली सी चमका कर हमको कौन रुलाता,
बरस रहे हैं ये दोनों दृग कैसे हरियारी में ?''[5]

इसी प्रकार की भावना की झलक 'परिचय' नामक रचना में भी दृष्टिगोचर होती है । 'झरना' कविता में रहस्यवादी भावना का चित्रण चाहे सम्पन्न रूप से 'दर्शन' रचना के रहस्यवाद के दर्पण में देखा जा सकता है, किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वह समग्रतः रहस्यवादी दृष्टि है क्योंकि उसमें वैयक्तिक प्रेम की अभिव्यक्ति कहीं अधिक प्राप्त होती है । निम्न पंक्तियों में इसी प्रकार की भावना का समावेश प्राप्त होता है :–

''किन्तु किसी के मुख की मुख की छवि किरणें घनी,
रजत रज्जु सी लिपटी नौका से वहीं,
बीच नदी में नाव किनारे लग गई ।
उस मोहन मुख का दर्शन होने लगा ।।''[6]

रहस्यवादी भावना के साथ–साथ प्रसाद जी ने अपने विचारों में स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति का भी सफल रूप में प्रयोग किया है, जिसके फलस्वरूप उनके काव्य में नवीनता का आभास होने लगता है । उनकी अन्तर्दृष्टि रूढि, विद्रोह और स्थूलता से उन्मुक्त होकर सूक्ष्म की ओर उन्मुख हुई है । वह कृत्रिमता से यथार्थ, रूढ़ि से स्वच्छन्दता और नीरसता से सरसता की ओर अग्रसर होती दिखाई पड़ती है । कवि के इन्हीं भावों का समावेश 'झरना' कविता में अकृत्रिम निर्झर की भांति उन्मुक्त गीतों से प्रवाहमान होता दिखाई देता है :–

''कर गई प्लावित तन–मन सारा ।
एक दिन तब अपाङ्ग की धारा ।।
हृदय से झरना –
वह चला, जैसे दृगजल ढरना ।
प्रणय वन्या ने किया पसारा ।
कर गई प्लावित तन मन सारा ।।''[7]

कवि प्रसाद जी के मन की यह सभी भावनाएं 'झरना' के माध्यम से विविध धाराओं में प्रवाहित होती हुई अपनी चरम सीमा तक पहुँचने में सफल होती है । अतः कहा जा सकता है कि 'झरना' के माध्यम से प्रसाद जी ने द्विवेदी जी की इतिवृतात्मकता और स्थूलता का विद्रोह कर छायावादी काव्य को नवीन स्वरूप प्रदान किया ।

'झरना' के गीतों के माध्यम से ही प्रसाद जी ने भावुक जीवन की कहानी प्रस्तुत की है । इसमें उनके जीवन की वैयक्तिक अनुभूति खुलकर अभिव्यक्त नहीं हो पाती अतः प्रसाद जी ने अपनी इस अनुभूति को छाया रूप में व्यक्त करके काव्य में नवीन जीवन के दर्शन करवाए हैं। 'झरना' की अनेक कविताओं में कवि के अनन्य रूप झलकते दिखाई देते हैं क्योंकि उसके जीवन में अधीरता, अस्थिरता, उन्माद आसक्ति, विरह आदि सभी प्रकार के रंगों की प्राप्ति हमें 'झरना' में पूर्ण रूप में उपलब्ध होती है। 'झरना' में प्रसाद जी ने छायावादी काव्य के अनुकूल जीवन को नवीन रूप में प्रस्तुत किया है । उनके गीतों का स्वर अधिक सौष्ठवपूर्ण नहीं हो पाया क्योंकि उसका स्पष्ट स्वर गंभीरता में बाधक बन गया है।

''सौदा कर लो, बात मान लो, फिर पीछे पछिता लेना,
खरी वस्तु है, कहीं न इसमें, बाल बराबर भी बल है ।''[8]

प्रसाद जी ने जीवन में यौवन, उल्लास, सरस, कौतूहल, स्वप्निल, प्रेमिल और निश्चिंतता से युक्त जीवन के महत्व को 'झरना' में अभिव्यक्त किया है । उन्होंने 'झरना' के काव्य में जीवन की यौवनावस्था से लेकर प्रौढ़ होने तक की सारी मानसिक व्यथाओं को नवीन रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है ।

'झरना' में जीवन के अनेक रंगों –– आशा, निराशा, अनुनय–विनय, विरह–मिलन, हर्ष–विषाद, उत्थान–पतन, दुःख–सुख आदि सभी का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है। लहरों की भांति मन में उठने वाले युवा हृदय की भावनाओं को कल–कल की ध्वनि से ध्वनित किया है। कवि प्रसाद जी ने अपनी कल्पना की सात्विक भूमि पर ऐसे माधुर्य भाव की सृष्टि को दृष्टांकित किया है, जिसकी माधुरी में जीवन को समाप्त करने का गुण विद्यमान होता है । 'झरना' की प्रथम रचना 'परिचय' में, जीवन में यौवन के पदार्पण के उपरान्त नई मनोवृत्ति का उल्लेख प्रस्तुत हुआ है:–

''रहे रजनी में कहाँ मलिन्द ?
सरोवर बीच खिला अरविन्द ।।
कौन परिचय था ? क्या सम्बन्ध ?
मधुर मधुमय मोहन मकरन्द ।।''[9]

अतः प्रसाद जी ने 'झरना' काव्य में जिस प्रकार से जीवन के भिन्न–भिन्न रूपों से साक्षात्कार करवाया है, उसी प्रकार से छायावाद की मुख्य प्रवृत्ति प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन रूप को भी बड़ी ही सजगता तथा कुशलतापूर्वक वर्णित किया है । प्रसाद जी द्वारा रचित 'झरना' कृति का नाम सुन कर सर्वप्रथम यह आभास होता है कि इनकी यह रचना प्रकृति के साक्षात दर्शन करवाती है । ऐसा प्रतीत होता है कि 'झरना' का आधार एवं मूल केवल प्रकृति है । छायावादी काव्य की प्रवृत्ति के अनुकूल ही इसमें प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों को स्पष्ट रूप में अंकित किया गया है । प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूपों की प्रस्तुति करके प्रसाद जी ने अपनी सक्षमता का आभास करवाया है, द्विवेदी युग के प्रकृति चित्रण को वर्ण्य–विषय के रूप में प्रस्तुत करने वाली प्रवृत्ति के विपरीत उन्होंने छायावादी काव्य की प्रवृत्ति प्रकृति को आलम्बन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास बड़ी ही सहजतापूर्वक किया है । 'झरना' काव्य में प्रसाद ने प्रकृति के माध्यम से ही काव्य में रहस्यात्मकता, स्वच्छन्दता, प्रेम, विरह, मिलन आदि का सजीव चित्रांकन किया है।

प्रकृति के निकट तक व आत्मिक सामीप्य में रहने के परिणामस्वरूप जो उल्लास, कौतुहल आदि की भावना मन में उत्पन्न होती है, वह 'झरना' के अनेक स्थलों में दृष्टिगोचर होती है । प्रसाद जी ने आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य को परखने का सफल प्रयास किया है और वे प्रकृति के रहस्य को जानने के लिए उत्सुक हो उठते हैं

''स्वर्ग के सूत्र सदृश तुम कौन,
मिलाती हो उससे भूलोक ?
जोड़ती हो कैसा सम्बन्ध,
बना दोगी क्या विरज विशोक ।''[10]

* * *

''तारिकाएं नील नभ में आज,
फूल की झालर बनी है शोभती ।
गन्ध सौरभ वायुमण्डल की तहें,
अन्तरिक्ष विशाल में मिल रही ।
चन्द्र–कर पीयूष वर्षा कर रहा ।
दृष्टि पथ में सृष्टि है आलोकमय,
विश्व वैभव से भरा यह धन्य है ।''[11]

यद्यपि यह भाव प्रिय–मिलन से फूटे हैं अतः यहाँ प्रकृति उद्दीपन रूप में प्रस्तुत हुई है, किन्तु इस भावना में आनन्दमयी प्रकृति के प्रति कवि का अनुराग निहित है । प्रसाद जी की प्राकृतिक वस्तुओं के प्रति रुचि आरम्भ से ही रही है । कवि ने अपनी रुचि और भावों के अनुसार प्रकृति के कोमल पदार्थों को लिया है । 'हृदय का सौन्दर्य' में प्रकृति चित्रण कुछ इस प्रकार किया गया हैः–

''नदी की विस्तृत बेला–शान्त,
अरुण मंडल का स्वर्ण विलास,
निशा का नीरव चन्द्र–विनोद,
कुसुम का हँसते विकास ।
एक से एक मनोहर दृश्य,
प्रकृति की क्रीड़ा के सब छन्द ।
सृष्टि में सब कुछ है अभिराम,
सभी में है उन्नति या ह्रास ।''[12]

प्राकृतिक उपादानों द्वारा मानव मन और हृदय की बात कवि ने बड़े अच्छे ढंग से व्यक्त की है जो 'झरना' की 'असंतोष' शीर्षक कविता में दृष्टव्य है :–

हरित वन कुसुमित हैं द्रुम वृन्द;
बरसता है मलयज मकरन्त ।
स्नेह मय सुधा दीप है चन्द;
खेलता शिशु होकर आनन्द ।
क्षुद्र गृह किन्तु हुआ सुख मूल;
उसी में मानव जाता भूल ।[13]

छायावादी काव्य में निहित प्रवृत्ति के आलम्बन रूप, को प्रसाद के 'झरना' काव्य की रचनायें 'दो बूँद' तथा 'बसन्त' में स्पष्ट रूप में अंकित किया गया है :–

तू आता है फिर जाता है ।
जीवन में पुलकित प्रणय सदृश,
यौवन की पहली कान्ति अकृश,
जैसी हो वह तू पाता है ।
हे बसन्त तू क्यों आता है ?[14]

प्रकृति के आलम्बन रूप के साथ–साथ प्रकृति के उद्दीपन रूप को भी सजीवता से प्रस्तुत किया गया है । जिसका उदाहरण 'पी कहाँ' नामक रचना में स्पष्ट झलकता हैः–

नभ हृदय में घिरी मेघ माला ।
चंचला कर रही है उजाला ।।[15]

अतः यह कहा जा सकता है कि 'झरना' गीत संग्रह में प्रकृति को दोनों रूपों में स्वीकृति प्राप्त हुई – आलम्बन रूप में भी तथा उद्दीपन रूप में भी । 'झरना' में जिस प्रकार से प्रकृति चित्रण सजीवता से प्रस्तुत किया गया है उसी प्रकार से नारी के सौन्दर्य की बात भी विशेष रूप में की गई है । इस काव्य में नारी को केवल प्रियतमा के रूप में ही स्वीकार किया गया है । उसकी दूसरी चारित्रिक विशेषताओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया। 'झरना' में नारी के सौन्दर्य की अनुभूति 'रूप' शीर्षक कविता में स्पष्ट रूप से झलकती है :–

ये बंकिम भ्रू, युगल कुटिल कुन्तल घने,
नील नलिन से नेत्र – चपल मद से भरे;
अरुण राग रंजित कोमल हिम खण्ड से–
सुन्दर गोल कपोल, सुदर नासा बनी ।[16]

अतः 'झरना' में नारी के जिस रूप का चित्रण प्राप्त होता है, वह केवल उसके बाह्य स्वरूप को अंकित करता है । 'झरना' छायावादी काव्य की प्रथम कृति के रूप में इसलिए स्वीकार की गई है क्योंकि इसमें छायावादी काव्य की सारी प्रवृत्तियों का उल्लेख है । यह कहना अतियुक्ति–युक्त प्रतीत होता है कि 'झरना' में सर्वप्रथम लगभग सभी छायावादी काव्य की विशेषताओं के दर्शन होते हैं ।

संदर्भ

1. जयशंकर प्रसाद परिप्रेक्ष्य एवं परिदृश्य, डॉ. वेदप्रकाश जुनेजा, पृष्ठ–३७
2. 'झरना' – जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–७१
3. 'झरना' – जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–७
4. 'झरना', जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–४१
5. 'झरना' – जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–७८
6. 'झरना' – जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–४१
7. 'झरना' – जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–२
8. प्रसाद साहित्य की समीक्षा – कैलाशनारायण अवस्थी, पृष्ठ–७६
9. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–४
10. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–१५
11. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–४३.
12. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–५२
13. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–२७
14. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–१३
15. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–३६
16. 'झरना' जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–८